26 दिसम्बर 2022, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 41, अंक 6, कुल पृष्ठ 36 ISSN 2454-5163

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

जैन समाज का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सर्वश्रेष्ठ तीर्थराज

अनंत तीर्थंकरों की निर्माण-स्थली

शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखरजी

वीतराग-विज्ञान (473)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
व्हाट्सऐप नं. : 7412078704
E-mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7000
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10000**

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तीर्थराज

जहाँ से तीर्थंकर या अन्य सामान्य केवली मुक्त हुए हैं, उन्हें सिद्धक्षेत्र कहा जाता है। जहाँ से तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों में से एक या एकाधिक कल्याणक हुए हों, उन्हें कल्याणक तीर्थ कहते हैं। कुछ स्थान विशाल जिनबिम्बों के कारण भी तीर्थ कहे जाने लगते हैं। जैनबद्री को गोम्मटेश्वर बाहुबली की विशाल मूर्ति के कारण ही तीर्थ कहा जाता है। इसीप्रकार मूड़बद्री को रत्नों के जिनबिम्बों के कारण और धवलादि ग्रन्थों की मूल प्रतियों के संरक्षण के कारण तीर्थ माना जाता है। खजुराहो और देवगढ अपनी कलात्मकता के कारण तीर्थ कहे जाते हैं। वे कलातीर्थ के रूप में ही प्रसिद्ध हैं।

वैसे तो सभी तीर्थ परम-पावन ही हैं; तथापि उन तीर्थों की महिमा विशेष है, जो तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों से संबंधित हैं; क्योंकि तीर्थंकर ही तो जैनदर्शन और धर्म के सूत्रधार हैं। कल्याणक तीर्थों में भी वे तीर्थ अधिक महत्त्व रखते हैं, जो तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि हैं; क्योंकि निर्वाण ही तो अन्तिम लक्ष्य है, परम साध्य है।

सम्मेदशिखर वर्तमान चौबीसी के बीस तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि होने से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सर्वश्रेष्ठ तीर्थराज है।

- शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखर (पृष्ठ क्र. 8-9)

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 41 (वीर निर्वाण संवत् 2549) **473/अंक : 06**

सुनो जिया ये सतगुरु की बातें...

सुनो जिया ये सतगुरु की बातैं, हित कहत दयाल दया तैं।

यह तन आन अचेतन है तू, चेतन मिलत न यातैं।
तदपि पिछान एक आतमको, तजत न हठ शठ-तातैं।।
सुनो जिया ये सतगुरु की बातें।।1।।

चहुँगति फिरत भरत ममताको, विषय महाविष खातैं।
तदपि न तजत न रजत अभागै, दृग व्रत बुद्धिसुधातैं।।
सुनो जिया ये सतगुरु की बातें।।2।।

मात तात सुत भ्रात स्वजन तुझ, साथी स्वारथ नातैं।
तू इन काज साज गृहको सब, ज्ञानादिक मत घातै।।
सुनो जिया ये सतगुरु की बातें।।3।।

तन धन भोग संजोग सुपन सम, वार न लगत विलातैं।
ममत न कर भ्रम तज तू भ्राता, अनुभव-ज्ञान कलातैं।।
सुनो जिया ये सतगुरु की बातें।।4।।

दुर्लभ नर-भव सुथल सुकुल है, जिन उपदेश लहा तैं।
'**दौल**' तजो मनसौं ममता ज्यों, निवडो द्वन्द दशातैं।।
सुनो जिया ये सतगुरु की बातें।।5।।

– कविवर दौलतरामजी

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2023

शुक्रवार, 03 फरवरी 2023

1. जैन बालपोथी भाग-1
2. बालबोध पाठमाला भाग-1
3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1
4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1
5. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध
6. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध)
7. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
8. छहढाला (पूर्ण)
9. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत)

शनिवार, 04 फरवरी 2023

1. जैन बालपोथी भाग-2
2. बालबोध पाठमाला भाग-2
3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-2
4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2
5. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध
6. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध)
7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़)
8. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण)
9. विशारद प्रथम खण्ड - प्रथम वर्ष
10. विशारद प्रथम खण्ड - द्वितीय वर्ष

रविवार, 05 फरवरी 2023

1. बालबोध पाठमाला भाग-3
2. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण)
3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3
4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण)
5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट

- बालबोध पाठमाला एवं जैन बालपोथी की परीक्षायें मौखिक लेवें।
- परीक्षा का समय सुबह 9 से शाम 5 तक सुविधानुसार सैट कर सकते हैं।
- यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा दिन में दो बार लेवें।

सम्पादकीय

अधूरी उल्टी आत्मकथा

आज माघ शुक्ल त्रयोदशी रविवार तदनुसार 13 फरवरी सन् 2022 का दिन है और प्रात: के 5 बजकर 15 मिनट हुए हैं।

मैं मुम्बई के ब्रीचकैंडी अस्पताल के 301 रूम में अकेला हूँ। अध्यात्मप्रकाश बाहर के सोफे पर सो रहा है; क्योंकि इस रूम में वह इस समय आ नहीं सकता।

मैं अपने में तल्लीन था कि दो नर्सें मेरे पास आईं और बोलीं हमें आपका ई.सी.जी. करना है।

मैंने कहा – कर लीजिये, पर ई.सी.जी. करने के उपरान्त मुझे चार कागज और एक पैन दीजियेगा; मैं कुछ लिखना चाहता हूँ।

ई.सी.जी. के बाद मैं प्रतीक्षा करता रहा पर वे दूसरे किसी जरूरी काम में लग गईं। पाँच मिनट बाद मैंने देखा तो उनने कहा कि हम जरूरी काम कर रहे हैं, उसके बाद हम आपको कागज अवश्य देंगे। मैं उनकी प्रतीक्षा करता रहा। कुछ मिनट बाद वे कागज-पैन लाईं।

उसी के एक दिन पहले मेरा ऑपरेशन हुआ था और मुझे लग रहा था कि अब मैं स्वस्थ हो रहा हूँ और कुछ काम कर सकूँगा। मुझे क्या करना है? मैं इसकी योजना बना रहा था।

मेरी सीपीएपी[1] मशीन खराब हो रही थी और मैं रात के साढ़े तीन बजे तक सो नहीं पाया। नर्सें मुझे परेशान होते देख रही थीं और

---

1. कॉन्टिन्यूअस पॉज़िटिव एयरवे प्रेशर (रात को सोते समय श्वसनमार्ग को खुला रखने हेतु प्रयोग की जाने वाली मशीन।)

दस-बीस बार मेरे पास आईं और मेरी कुशलता जानती रहीं।

मुझे आत्मकथा लिखने के लिए अनेक लोग समय-समय पर प्रेरणा करते रहते हैं; पर मेरे साले जयकुमारजी तो पीछे ही पड़ गये और स्वयं के जीवन की अन्तिम साँस तक पीछे पड़े ही रहे।

अत्यधिक अभावों के बीच बीते बचपन के बारे में कुछ भी लिखने में मुझे कुछ सार नहीं दिखता; किन्तु जीवन के अन्त समय में जैसा जीवन जी रहा हूँ; उसके प्रतिपादन में कुछ सारभूत बातें लिखीं जा सकती हैं।

यद्धपि तेजी से भागते हुये इस जीवन का कोई भरोसा नहीं है; कभी भी समाप्त हो सकता है; इस कथा का अधूरा रहना सहज ही है; तथापि जितना लिखा जा सके, उतना ही सही.....।

अत: यह कथा अधूरी ही रह जावेगी - यह मानकर ही आरम्भ कर रहा हूँ; इसलिए इसके नाम में **अधूरा** शब्द जोड़ रहा हूँ और आदि से आरम्भ न करके अन्त से आरम्भ कर रहा हूँ।

आज मैं अत्यन्त सहज और शान्त जीवन जी रहा हूँ। इस जगत में जब जो जैसा घटित हो रहा है; वह मुझे अत्यन्त सहजभाव से सबकुछ सहज स्वीकृत है। उसमें कुछ भी फेरफार करने की बुद्धि नहीं है; क्योंकि मैं बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ कि उसमें कुछ फेरफार संभव नहीं है।

परपदार्थों में तो कुछ किया ही नहीं जा सकता, पर का तो मैं कुछ कर ही नहीं सकता; अपने में भी जो हो रहा है, होने वाला है; उसमें भी कुछ फेरफार करना संभव नहीं है।

उक्त सभी कार्यों की अत्यन्त सहजभाव से सहज स्वीकृति ही धर्म है, सम्यग्श्रद्धा है, सम्यग्ज्ञान है और सहज आचरण है; सच्चा

जीवन है। मैं अभी ऐसा जीवन ही जी रहा हूँ।

यद्यपि मैं यह सब अपनी किशोर-अवस्था से ही जानता रहा हूँ; तथापि जैसी दृढ़ता आज है, वैसी दृढ़ता आरम्भ में नहीं थी।

करीब तीन-चार साल पहले की बात है। मैं डॉक्टरों के हिसाब से जीवन के अन्तिम समय में था। यह बात लगभग सभी को मालूम थी; पर मुझे नहीं बताया गया था।

लोगों का मेरे पास आने पर प्रतिबंध था। पर मेरे एक दबंगमित्र पहरेदारों की उपेक्षा करते हुये मेरे पास आ गये। मेरी कुशलता के समाचार पूँछकर बोले - ''आप कहाँ जावोगे?''

मैंने कहा - ''कहाँ जाऊँगा? डॉक्टर लोग छुट्टी देंगे तो घर जाऊँगा और कहाँ जाऊँगा?''

वे बोले - ''यह तो ठीक है, पर मैं तो यह पूँछ रहा हूँ कि अगले भव में कहाँ जाओगे?''

मैंने कहा - ''मेरी सुनिश्चित क्रमबद्धपर्याय में जहाँ जाना नक्की होगा, वहाँ सहजभाव से चला जाऊँगा। मुझे कुछ विशेष विकल्प नहीं है।''

वे बोले - ''कि भगवान आपसे पूँछें कि तुम कहाँ जाना चाहते हो तो आप क्या उत्तर दोगे?''

''मैं किसी ऐसे भगवान को नहीं मानता जो लोगों से इसप्रकार पूँछते फिरें?''

''फिर भी आपको यह तो सोचना ही चाहिये कि आखिर आप कहाँ जाना चाहते हैं?''

''मैंने कहा - जानते हो आप क्या कह रहे हैं? आप मुझसे

निदान नामक आर्त्तध्यान करने के लिए कह रहे हैं?

मुझे संसार की किसी पर्याय की वांछा नहीं है। जब जैसा जो होना होगा, हो जायेगा; मुझे सब सहज स्वीकृत है। मेरी कोई माँग नहीं है।''

''बड़े-बड़े विद्वान तो कहते हैं कि वे तो पूज्य गुरुदेवश्री के साथ मोक्ष जावेंगे।''

''कहते होंगे, पर मैं किसी के साथ कहीं नहीं जाना चाहता।

आप जानते हैं, गुरुदेवश्री बहुत बड़े ज्ञानी-धर्मात्मा महापुरुष थे। वे ऊँचे से ऊँचें स्वर्ग में गये होंगे। वहाँ अनेक सागरों तक रहेंगे। इतने लम्बे काल तक संसार में रहने का मेरा विचार नहीं है।

मुक्ति का मार्ग साथ का मार्ग नहीं है, अकेले का मार्ग है। साथ की आकांक्षा तो निगोद का मार्ग है; मुक्ति के मार्ग में साथ का कोई स्थान नहीं है। वह तो अकेलेपन का मार्ग है। मैंने तो बहुत पहले लिखा था कि -

ले दौलत-प्राणप्रिया को तुम, मुक्ति न जाने पावोगे।

यदि एकाकी चल पड़े नहीं तो, यहीं खड़े रह जावोगे।।

साथ की भावना संसार की भावना है, मुक्ति की भावना तो अकेलेपन की भावना है, एकत्व-अन्यत्व की भावना है।''

तब वे बोले- ''इस पर्याय से सीधे मोक्ष में तो जाने वाले हो नहीं, यहीं चतुर्गतिरूप संसार में ही कहीं ना कहीं जावोगे। तो....''

''तो क्या, जहाँ क्रमबद्धपर्याय के अनुसार जाना होगा, चले जावेंगे; पर भावना तो इन सब से मुक्त होने की ही भावेंगे।

ज्ञानीजन तो संसार में कहीं जाने की भावना नहीं भाते। उनकी भावना तो सदा भव का अभाव करने की ही रहती है।

अरे भाई! सभी जीवों के अनादि से अनन्त काल तक के सभी भव पूर्ण सुनिश्चित ही हैं। किस के बाद कौनसा भव होगा – यह भी सुनिश्चित है और भव का अभाव कब होगा – यह भी सुनिश्चित है। तात्पर्य यह है कि भव का अभाव होगा या नहीं, यदि होगा तो कब होगा; – यह सब पूर्व सुनिश्चित है। उसमें कुछ भी करना संभव नहीं है।

यद्यपि प्रत्येक द्रव्य अपनी परिणति का कर्त्ता-धर्त्ता स्वयं ही है; तथापि जो पूर्व निश्चित है, उसी का सहज कर्त्ता-धर्त्ता है; उसमें किसीप्रकार का फेरफार होना संभव नहीं है। केवली भगवान के ज्ञान में जो जैसा झलका है, आया है; वह वैसा ही होगा।

आप गुरुदेवश्री की शरण में आये हैं, उनमें और उनकी वाणी में पूरी श्रद्धा रखते हैं और जिनवाणी का श्रद्धापूर्वक स्वाध्याय करते हैं। अत: यह सब भी जानते होंगे। अत: भव की कामना की बात क्यों करते हैं?

भव को सुधारने की बातें तो खूब चलती हैं। त्रिभाग में आयुबंध होता है – यह कहकर जीवन के उत्तरार्द्ध में भावों को सुधारने का उपदेश दिया जाता है।

जब आगे के सब भव निश्चित ही हैं और उनमें कोई फेरफार नहीं किया जा सकता तो फिर भावों को सम्भालने की बात का क्या अर्थ रह जाता है? क्योंकि अगले भव में जिस पर्याय में जाना है; उस भव में जाने के लिए जैसे भावों का जब होना आवश्यक है; तब वैसे भाव सहज ही होंगे – उनके कर्तृत्व का भार माथे पर क्यों रखना?

जब जो कुछ होना है; उस समय वह सब सहज भाव से ही हो रहा है, होगा; तो फिर उसमें फेरफार करने का भार क्यों रखना?

तत्संबंधी विकल्प क्यों रखना?

''आप ठीक कहते हो, पर हम क्या करें विकल्प सहज ही होते हैं।''

''होते हैं तो होने दें।''

''उन्हें रोकने के भाव भी आते हैं।''

''आते हैं तो आने दें। सबकुछ सहज होने दें। आप तो करने-धरने के भार से निर्भार रहें। जो कुछ सहज हो रहा है, वह होने दें।''

वीतरागी-सर्वज्ञ भगवन्तों की दिव्यध्वनि के अनुसार बने शास्त्रों में 'भविष्य में कब-क्या-कैसे होगा? - इस सम्बन्ध में अगणित घोषणायें की गई हैं। न केवल प्रथमानुयोग में, अपितु करणानुयोग में इसप्रकार के अगणित वचन आते हैं कि छह महिना और आठ समय में छह सौ आठ जीव ही निरन्तर नित्य-निगोद से निकलते हैं और इतने ही जीव छह महिने और आठ समय में मोक्ष जाते हैं। इसमें कोई फेरफार संभव नहीं है।

इन सबका कर्त्ता-धर्त्ता कोई नहीं है। यह सब कुछ सहज ही होता है। इन सब में किसी की इच्छानुसार कुछ नहीं होता। जब हम कुछ कर ही नहीं सकते - इस बात का स्पष्ट उल्लेख है तो फिर कुछ करने-धरने का उपदेश ही क्यों दिया जाता है?

अनन्त सुखी होने का एकमात्र उपाय ध्यान है और वह ध्यान सहज ज्ञानस्वरूप है। **(क्रमशः)**

नोट : इस अकं से पूर्व सम्पादकीय में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा **एकत्व-विभक्त आत्मा (रोला शतक)** छन्द क्र. - 67 तक प्रकाशित किया जा चुका है, इसके पूर्ण पठन हेतु आप सप्तशतक नाम से प्रकाशित कृति या उसकी PDF प्राप्त कर सकते हैं। सम्पर्क करें-

छहढाला प्रवचन

सिद्धि प्राप्ति का उपाय

परमाण-नय-निक्षेप को न उद्योत अनुभव में दिखै,
दृग-ज्ञान-सुख-बलमय सदा नहिं आन भाव जु मो विषै।
मैं साध्य-साधक मैं अबाधक, कर्म अरु तसु फलनितैं,
चित् पिण्ड चण्ड अखण्ड सुगुणकरण्ड च्युत पुनि कलनितैं।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजी कृत छहढाला की छठवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

द्रव्य-गुण-पर्यायस्वरूप आत्मवस्तु का निर्णय करते समय नय-प्रमाण के विचार होते हैं और उनसे एकान्तपक्षरूप विपरीत मान्यता दूर हो जाती है; परन्तु प्रमाण आदि के विकल्पों में ही अटके रहने से आत्मा के स्वरूप का अनुभव नहीं होता। जो विकल्पों में ही रुक जाता है, उसे अनुभव का आनन्द नहीं आता। अनुभव के समय तो उपयोग शुद्धात्मा में ही एकाग्र होकर आनन्द का साक्षात् वेदन करता है। वस्तु स्वरूप का निर्णय करने के लिये विचार करते समय प्रमाण-नय-निक्षेप के विकल्प भी होते हैं, फिर निर्विकल्पदशा में साक्षात् शुद्धनय से आत्मा का वेदन होता है, वहाँ विकल्प नहीं होते।

विचारदशा में जो प्रमाण या नय के विकल्प होते हैं। वे सच्चे प्रमाण या शुद्धनय नहीं थे; इसलिए उन्हें हेय या बाधक कहा है। अनुभव में जो शुद्धोपयोगरूप शुद्धनय है, वह भूतार्थ है। समयसार में भी **'शुद्धनय को भूतार्थ कहा है, वह बाधक या हेय नहीं है'** - ऐसा विकल्प भी शुद्धात्मा को नहीं पकड़ सकता, विकल्प से भिन्न ज्ञान ही शुद्धात्मा को पकड़ सकता है।

अनुभव में शुद्धनय भी है और निर्विकल्प प्रमाण भी है; परन्तु उसमें विकल्प नहीं है, भेद नहीं है। **'मैं सिद्ध समान हूँ, द्रव्यदृष्टि से शुद्ध हूँ'** - इत्यादि विकल्प होते हैं; परन्तु वे ज्ञान का स्वरूप नहीं हैं। आत्मा का स्वरूप तो सिद्ध समान शुद्ध ही है; परन्तु विकल्प स्वरूप में नहीं हैं; इसलिए अनुभव के समय वस्तु का यथार्थ ज्ञान रह जाता है और विकल्प छूट जाते हैं।

अहो! आत्मवस्तु की कीमत अचिन्त्य है, विकल्पों से उसका मूल्यांकन नहीं हो सकता। स्वभावरूपी समुद्र के गहरे तल तक विकल्प नहीं जा सकते, वहाँ तो विकल्परहित अतीन्द्रिय ज्ञान ही पहुँच सकता है। अनन्त गुणों के भण्डारस्वरूप आत्मा जैसा है, वैसा लक्ष्य में ले तो उपयोग उसमें एकाग्र होता ही है और निर्विकल्प अनुभूति भी होती ही है। अनुभव में अनन्तगुणों का विशाल खज़ाना हाथ में आ जाता है। भाई! चैतन्य का चमत्कार, गुणों का गोदाम, शक्तियों का संग्रहालय तुझमें ही है। तुझमें अखूट भण्डार है, तू उसे खोल और भोग। चूरमा में घास के समान स्वरूप में विकल्पों को मत मिला। धर्मी अपने स्वरूप का अनुभव अस्ति-नास्तिरूप से करते हैं। **मैं अनन्त गुणों का भण्डार हूँ** - ऐसा अनुभव अस्तिरूप है और **'कल' अर्थात् राग-द्वेषादि कषायभाव मुझमें नहीं हैं** - ऐसा अनुभव नास्तिरूप है। **मैं ऐसा हूँ और ऐसा नहीं** - ऐसा विकल्प अनुभव में नहीं होता। वहाँ तो शुद्धोपयोग रहता है। धर्मात्मा तो कर्म और कर्मफल से रहित चैतन्यरत्नाकर भगवान आत्मा का अनुभव करते हैं। द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म के अनुभव से बाहर रहते हैं। वे अपने आत्मा में अशुद्धभावों को नहीं देखते; उन्हें तो खेद और भेद रहित एक चैतन्यतत्त्व ही अनुभव में दिखता है। **'भाति न द्वैतमेव'** अर्थात् द्वैत ही प्रतिभासित नहीं होता।

देखो यह धर्मात्माजीव की अनुभवदशा! पहले शरीरादि से भिन्न आत्मस्वरूप का विचार किया था। अब उससे भी आगे बढ़कर साक्षात् अनुभव प्रकट किया। इसके बाद मुनिराज को ध्यान दशा में शुद्धोपयोगरूप

स्वरूपाचरण प्रकट होता है, जिसका वर्णन इस छन्द में किया है, इसके फल में केवलज्ञान होने का वर्णन आगामी छन्द में करेंगे।

चैतन्यस्वरूप भगवान आत्मा आनन्द का समुद्र है, उसमें क्लेश की गंध भी नहीं है। छह खण्ड के संयोग में रहनेवाले धर्मी भी असंयोगी आत्मा के ध्यान में ऐसे आनन्द का अनुभव करते हैं कि ध्यान से च्युत होने पर भी उनके श्रद्धा-ज्ञान में संयोगों से भिन्न आत्मा निरन्तर वर्तता रहता है।

भगवान आत्मा के चैतन्य क्षेत्र में अनन्त गुणों की बस्ती है, वह कोई उजाड़ या वीरान नहीं है। **'जिसमें अनन्तज्ञान-दर्शन-आनन्द-बल आदि अनन्त गुणों का वास है'** - ऐसा आत्मा मैं स्वयं हूँ - धर्मी जीव निरन्तर ऐसा अनुभव करते रहते हैं। अनुभव के समय उन्हें शुद्धोपयोग होता है, जिसमें परपदार्थों का लक्ष्य तो होता ही नहीं तथा **'मैं ज्ञान हूँ' 'सिद्ध समान हूँ'** - ऐसे विकल्प भी नहीं होते। ज्ञान ने जिस शुद्धात्मा का निर्णय किया वही साक्षात् अनुभव में आता है और वही श्रद्धा में आता है। फिर स्वरूप में विशेष स्थिरता होने पर जीव मुनि होता है तथा अखण्ड शुद्धोपयोग द्वारा स्वरूप में लीन होने पर केवलज्ञान प्राप्त करके सर्वज्ञ बन जाता है।

जिसके विचारों में भी आत्मा का सच्चा स्वरूप नहीं आता और जो राग से लाभ माननेरूप विपरीत विचार करता है, वह राग को छोड़कर चैतन्य का अनुभव कैसे करेगा? इसलिए सर्वप्रथम आत्मा का जिज्ञासु होकर उसके सच्चे स्वरूप का विचार और निर्णय करना चाहिए। सच्चा निर्णय करते ही अन्दर से कोई अपूर्व प्रकार का विश्वास आ जाता है कि बस यही मेरा सच्चा स्वरूप है, इसके सन्मुख होने पर मुझे अपूर्व सम्यक्त्वादि भाव प्रकट होंगे। इसी विश्वास के बल से स्वभावसन्मुखता का अपूर्व प्रयत्न उत्पन्न होता है।

यह आत्मा स्वयं साध्य है और स्वयं साधक है। आत्मा से भिन्न कोई साध्य या साधन नहीं है। भगवती प्रज्ञारूप मेरी शुद्ध परिणति ही साधन है,

जो मुझसे अभिन्न है। स्वानुभूति में साध्य-साधन भिन्न नहीं होते अर्थात् आत्मा साध्य और शुद्धोपयोग साधन - ऐसा भेद अनुभूति में नहीं रहता। आत्मा स्वयं साधन होकर पूर्णता को साधता है। फिर तू बाहर में अन्य साधन क्यों खोजता है? व्यर्थ में आकुलता क्यों करता है? अपने में ही ठहर जा ना।

धर्मी जीव राग या शरीरादि को सम्यक्त्व का साधन तो पहले से ही नहीं मानते थे; परन्तु मेरी ज्ञानदशा साधन है और आत्मा साध्य है - ऐसा यथार्थ साधक-साध्य का भेद भी उन्हें ध्यान के समय उत्पन्न नहीं होता। अज्ञानी जीवों को सच्चे साध्य-साधक की ख़बर नहीं है, वे रागादि बाधकभावों को साधक मानते हैं, इसलिए वे राग का विकल्प छोड़कर रागरहित आत्मा को नहीं साध सकते। वे जिसे साधन मानते हैं, उसे क्यों छोड़ेंगे?

ज्ञानी अपने आत्मा को ही साध्य-साधक-साधन मानते हैं। वे परद्रव्यों को अबाधक मानते हैं। परद्रव्य मुझे बाधा नहीं पहुँचा सकते, कर्म का बन्धन या राग-द्वेषादि बाधकभाव अर्थात् कर्म और उनका फल मेरे शुद्ध चैतन्यस्वरूप में नहीं हैं। '**चैतन्यचमत्कार में मात्र आनन्दमयी ज्ञानचेतना है, उसमें कर्मचेतना और कर्मफल चेतना नहीं है। मेरा चैतन्यभण्डार अनन्त उत्तमगुणों से भरा है**' - इसप्रकार स्वभाव सन्मुखता के जोर में श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र स्वभाव में ही एकाग्र हो जाते हैं, रागादि परभाव स्वभाव से भिन्न हो जाते हैं और आनन्द के वेदन में ऐसी लीनता हो जाती है कि द्वैत ही भासित नहीं होता, विकल्प लुप्त हो जाते हैं - ऐसी अनुभूति में उत्पन्न होनेवाला सम्यग्दर्शन अभेदरूप से आत्मा ही है।

प्रमाण-नय-निक्षेप, द्रव्य-गुण-पर्याय, नवतत्त्व आदि के विचारों को आत्मा की अनुभूति के लिए व्यवहार से साधन कहा गया था; परन्तु जो जीव अपने उपयोग को आत्मा के सन्मुख नहीं करते और भेद के विचारों में ही अटके रहते हैं, उनके लिए तो वे बाधक ही हो गए; क्योंकि जब तक वे भेद के विचारों में ढके रहेंगे तब तक आत्मा का निर्विकल्प अनुभव नहीं

होगा। विकल्पों से पार भूतार्थ स्वभाव सम्यग्दर्शन में किसप्रकार अनुभव में आता है, इसका अद्भुत वर्णन समयसार में अनेक स्थानों पर किया गया है। आचार्य भगवन्तों ने स्वानुभव की वीणा बजाकर ज्ञायक स्वभाव की अपूर्व महिमा गायी है। **भूतार्थ स्वभाव का आश्रय, शुद्ध नय, सम्यग्दर्शन, स्वरूपाचरण, निर्विकल्प अनुभूति, भेदज्ञान, अतीन्द्रिय आनन्द का स्वाद, परमात्मा का साक्षात्कार** आदि सब कुछ चौथे गुणस्थान में शुद्धोपयोग में एक साथ शुरु हो जाता है।

देखो यह चतुर्थ गुणस्थान की अपूर्व महिमा! छठवें-सातवें आदि गुणस्थान तो इससे भी अधिक ऊँचे हैं। आत्मानुभूति होने पर ही धर्म अर्थात् मोक्षमार्ग की शुरुआत होती है। रागादिभाव मोक्षमार्ग नहीं हैं; क्योंकि वे चैतन्यस्वभाव में ही नहीं हैं, अभूतार्थ हैं, विभाव हैं, अशुद्ध हैं, बाह्याचरण हैं। भगवान आत्मा विभावों का भण्डार नहीं है, वह तो शुद्ध गुणों का भण्डार है, '**सुगुण करण्ड**' है, उसके अनुभव में दोष या अशुद्धता नहीं है। गुणों के भण्डार में दोष कैसे हो सकते हैं? ऐसे आत्मा में जुड़ना ही शुद्धोपयोग है। शुद्धोपयोग में ही महान आनन्द है। मुनियों का जीवन ऐसे आनन्द से भरा हुआ है। वे आनन्दमय स्वरूपाचरण करते-करते अपने में केवलज्ञानादि निधान प्रकट करते हैं और उस समय परभावों की सम्पूर्ण प्रवृत्ति मिट जाती है। कहा भी है कि '**जिस होत प्रकटे आपनी निधि, मिटे पर की प्रवृत्ति सब**' ऐसा स्वरूपाचरण चौथे गुणस्थान में सम्यग्दर्शन द्वारा प्रकट होता है और वह अनुक्रम से बढ़ते-बढ़ते तेरहवें गुणस्थान में केवलज्ञान होने पर पूर्ण होता है। ●

सम्मेदशिखर न केवल तीर्थराज है; अपितु शाश्वत तीर्थधाम है; क्योंकि वहाँ से न केवल वर्तमान चौबीसी के बीस तीर्थंकर का निर्वाण हुआ है; अपितु अबतक वहाँ से असंख्य तीर्थंकरों व मुनिराजों का निर्वाण हो चुका है और भविष्य में भी अगणित तीर्थंकारों व मुनिराजों का निर्वाण होगा। **– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल**

नियमसार प्रवचन –

मुक्ति का कारण

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा 103 पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

जं किंचि मे दुच्चरित्तं सव्वं तिविहेण वोसरे।
सामाइयं तु तिविहं करेमि सव्वं णिरायारं।।103।।

(हरिगीत)

मैं त्रिविध मन-वच-काय से सब दुश्चरित को छोड़ता।
अर त्रिविध चारित्र से अब मैं स्वयं को जोड़ता।।103।।

अन्वयार्थ : मेरा जो कुछ भी दुश्चरित्र है; उस सभी को मैं मन-वचन-काय से छोड़ता हूँ और त्रिविध सामायिक अर्थात् चारित्र को निराकार करता हूँ, निर्विकल्प करता हूँ।

(गतांक से आगे....)

यह निश्चयप्रत्याख्यान का अधिकार है। राग रहित शुद्धात्मा को दृष्टि में लेकर उसमें स्थिर होने पर राग की उत्पत्ति ही न होना प्रत्याख्यान है – यह प्रत्याख्यान चारित्र है और **मुक्ति का कारण** है।

स्वभाव के आश्रय से प्रगट हुये जघन्य रत्नत्रय को मैं स्वभाव की लीनता द्वारा उत्कृष्ट करता हूँ अथवा सविकल्परत्नत्रय को स्वरूप की लीनता द्वारा निर्विकल्प शुद्ध करता हूँ। नवतत्त्व की श्रद्धा, शास्त्र का ज्ञान, पंचमहाव्रत – यह साकार रत्नत्रय है, इसमें राग है। शुद्धकारणपरमात्मा का श्रद्धान-ज्ञान करके उसमें लीन होना निराकार रत्नत्रय है; वह शुद्ध है, वही निश्चय से प्रत्याख्यान है और **मुक्ति का कारण** है।

सर्वज्ञ भगवान ने नौ तत्त्व भिन्न-भिन्न कहे हैं, उनमें जीव को जीव,

अजीव को अजीव, पुण्य को पुण्य, संवर को संवर – इसप्रकार नौ तत्त्वों को जैसे हैं वैसे मानना व्यवहारश्रद्धा है। नौ को नौ रूप से ही रखे और एक को दूसरे में मिलावें नहीं तो व्यवहार श्रद्धा कही जाय; किन्तु जीव जड़ की क्रिया करे, पुण्य से धर्म हो, शरीर की क्रिया से पुण्य-पाप हो – ऐसा जो मानता है, उसने तो अभी नौ तत्त्वों को भी नहीं माना। यहाँ तो कहते हैं कि नौ तत्त्वों की श्रद्धा का विकल्प तोड़कर 'मैं एक चैतन्यतत्त्व के आश्रय से निर्विकल्पश्रद्धा करके उसमें एकाग्र होता हूँ' – यही **मुक्ति का कारण** है।

नौ तत्त्व के लक्ष्य से होनेवाला व्यवहाररत्नत्रय वास्तव में विभाव है, वह स्वभावरत्नत्रय नहीं है। स्वभावरत्नत्रय तो निजस्वरूप के ही आश्रय से है, उसको स्वीकार करके अर्थात् उसको प्रगट करके मैं विकल्प को छोड़ता हूँ। त्रिकाली सहजस्वरूप ही मेरे रत्नत्रय का अवलम्बन है, नौ तत्त्वों का अवलम्बन मुझे नहीं है। संवर, निर्जरा और मोक्ष की निर्मलपर्याय के आश्रय से भी नई पर्याय प्रगट नहीं होती। ध्रुवस्वरूप के ही आश्रय से निर्मलदशा प्रगट होती है; इसलिए मैं उसकी श्रद्धा-ज्ञान-एकाग्रता को स्वीकार करके अपने रत्नत्रय को निर्विकल्प करता हूँ।

अन्य रीति से कहें तो मैं भेदोपचारचारित्र को अभेदोपचार करता हूँ। **भेदोपचार** का अर्थ है रागवाला चारित्र, उसको टालकर **अभेदोपचार** चारित्र प्रगट करता हूँ। अभी अभेद की भावना है, इसलिये उसको भी उपचार कहा और उस अभेदचारित्र की भावना का विकल्प भी छोड़कर स्वरूप में निश्चल होना **अभेद-अनुपचारचारित्र** है। मैं अपने चारित्र को अभेद-अनुपचार करता हूँ – इसतरह तीन प्रकार के चारित्र के उत्तरोत्तर अंगीकार करने से सहजपरमतत्त्व में अविचल स्थिरतारूप निश्चयचारित्र होता है। वह चारित्र निराकारतत्त्व में स्थित होने से निराकारचारित्र कहा जाता है, उसमें राग का विकल्प नहीं है; अत: वह **मुक्ति का कारण** है।

भेदरहित जो त्रिकाली चैतन्यतत्त्व है, उसको यहाँ निराकार कहा है,

उसमें लीनतारूप चारित्र भी निराकार है। इसप्रकार द्रव्य और पर्याय दोनों को निराकार कहा है – ऐसा निराकार वीतरागी चारित्र ही **मुक्ति का कारण** है।

इसीप्रकार श्री प्रवचनसार की तत्त्वप्रदीपिका नामक टीका में श्री अमृतचन्द्राचार्यदेव ने 12वें श्लोक में कहा है –

(वसंततिलका)

द्रव्यानुसारि चरणं चरणानुसारि
द्रव्यं मिथो द्वयमिदं ननु सव्यपेक्षम्।
तस्मान्मुमुक्षुरधिरोहतु मोक्षमार्गं
द्रव्यं प्रतीत्य यदि वा चरणं प्रतीत्य।।12।।

(दोहा)

चरण द्रव्य अनुसार हो द्रव्य चरण अनुसार।
शिवपथगामी बनो तुम दोनों के अनुसार।।12।।

श्लोकार्थ : चरण द्रव्यानुसार होता है और द्रव्य चरणानुसार होता है – इसप्रकार वे दोनों परस्पर सापेक्ष हैं; इसलिये या तो द्रव्य का आश्रय लेकर अथवा चरण का आश्रय लेकर मुमुक्षु अर्थात् ज्ञानी श्रावक और मुनिराज मोक्षमार्ग में आरोहण करो।

हे धर्मी जीवों! हे मोक्षार्थी जीवों!! यदि तुम्हें आत्मशान्ति चाहिये, तो द्रव्य का आश्रय करके मोक्षमार्ग में आरोहण करो। चारित्र द्रव्यानुसार होता है अर्थात् जितने बलपूर्वक, जितनी पकड़ पूर्वक द्रव्य में लीन होता है उतना ही चारित्र होता है। जितना द्रव्य का आश्रय करता है, उतनी ही शान्ति प्रगट होती है। चारित्र प्रगट होने से पहले '**द्रव्य कौन है**' उसकी पहचान तो होनी ही चाहिये। '**द्रव्यदृष्टि ही सम्यग्दृष्टि है**' जिसको अभी द्रव्य का भान ही नहीं, उसको उसके आश्रयरूप चारित्र नहीं हो सकता। चैतन्यचिन्तामणि का भान करके उसमें जितना एकाग्र होकर भावना करूँ, उतना ही फल

प्रगट होगा। चैतन्यचिन्तामणि अनादि-अनन्त है, उसकी भावना करने से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र और मोक्ष प्रगट हो जाता है। इसके अलावा इस देहादि का संयोग तो अनन्तबार आया और गया।

पुण्य-पाप के समय भी आत्मा उन पुण्य-पाप जितना नहीं हो गया। यदि पुण्य के समय आत्मा पुण्यरूप हो गया हो तो फिर वह पुण्य पलटकर पाप कहाँ से आया? इसीप्रकार यदि पाप के समय आत्मा पापरूप हो गया हो तो पाप पलटकर पुण्य कहाँ से हुआ? पुण्य-पाप दोनों का नाश हो जाने पर भी आत्मा ज्यों का त्यों अखण्ड रहता है – ऐसे द्रव्य का आश्रय करके चारित्र प्रगट होता है और जितनी वीतरागी पर्याय प्रगट हुई, उसमें द्रव्य अभेदपना पाता है। अन्तर का आश्रय करके जितना चारित्र प्रगट हुआ, उतनी ही द्रव्य की शुद्धता प्रगट हुई। अन्तर शक्तिस्वभाव त्रिकाल पवित्रता से भरा है, उसका अनुशरण करके चारित्र प्रगट होता है और उस चारित्र में द्रव्य की अभेदता है – इसप्रकार वे दोनों परस्पर अपेक्षावाले हैं। अत: हे मुमुक्षुगण! द्रव्य का आश्रय करके अथवा वीतरागी चारित्र का आश्रय करके मोक्षमार्ग में आरोहण करो।

इस गाथा की टीका पूर्ण करते हुए श्री पद्मप्रभमलधारिदेव कहते हैं –

(अनुष्टुभ्)

चित्तत्त्वभावनासक्तमतयो यतयो यमम्।
यतंते यातनाशीलयमनाशनकारणम्।।139।।

(दोहा)

जिनका चित्त आसक्त है, निज आतम के माँहि।
सावधानी संयम विषैं, उन्हें मरणभय नाँहि।।139।।

श्लोकार्थ : जिनकी बुद्धि चैतन्यतत्त्व की भावना में आसक्त है – ऐसे यति यम में प्रयत्नशील रहते हैं; संयम में सावधान रहते हैं। वह यम अर्थात् संयम यातनाशील यम अर्थात् मृत्यु के नाश का कारण है।

जिन्होंने अपने चैतन्य को जाना है और अपनी बुद्धि को चैतन्यतत्त्व की भावना में लीन किया है – ऐसे सन्त मुनिवर अन्तर स्वभाव के संयम में सावधान हैं, उनका वह संयम दु:खमय मरण के नाश का कारण है। संयम उस यातनाशील यम का नाश करनेवाला है। जिनको संयम प्रगट होता है, उनको जन्म-मरण का अभाव हो जाता है।

अरे जीव! यदि तू शान्ति का इच्छुक है, जन्म-मरण की यातना से छूटना चाहता है; तो ऐसी मुनिदशा प्राप्त करना ही पड़ेगी। यतिगण अपने संयम में प्रयत्नशील वर्तते हुए यातनामय यम का नाश करते हैं। जो ऐसा वीतरागी संयम प्रगट करते हैं, उनको पुन: मातृकुक्षि में अवतरित नहीं होना पड़ता, उनके दु:खमय मरण का नाश हो जाता है। अहो जीवों! एक चैतन्य ही शरण है।

'मरण से बचना हो तो उसका उपाय यह संयम है और यह संयम चैतन्यमूर्ति आत्मा के भान बिना प्रगट नहीं होता; इसलिए आत्मा को पहचानो – वही एक शरण है।'

स्वर्ग के इन्द्र को भी चैतन्य के सिवाय अन्य कोई शरण नहीं है। हजारों देवों की सेना भी मरणकाल में शरण नहीं होती। प्रथम स्वर्ग का इन्द्र स्वयं एकावतारी है, सम्यग्दृष्टि है, उसको अन्तर में आत्मा के शरण का भान है और अन्तिम समय में देहत्याग का प्रसंग आने पर शाश्वत जिनप्रतिमा के शरण में जाकर उसके चरणकमल पर हाथ रखकर कहता है कि हे नाथ! आपके कहे हुये धर्म का ही मुझे शरण है – ऐसी भावना भाते-भाते शान्ति से देह छूट जाती है और वहाँ से चयकर मनुष्यभव में अवतार लेता है। तत्पश्चात् दिगम्बर मुनिदशा प्रगट करके, अन्तर में चैतन्य के ऊपर दृष्टि जमाकर ऐसा पुरुषार्थ प्रगट करता है कि अल्पकाल में केवलज्ञान पाता है। अनन्ते तीर्थंकर, इन्द्र, चक्रवर्ती आदि इस चैतन्य के शरण को अंगीकार करके मोक्षगामी हुये हैं, अत: उसका भान करके उसका ही शरण लेना योग्य है, यही एक मृत्यु से बचने का उपाय है। ●

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

त्यागोपादानशून्यत्व शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

अन्यूनातिरिक्तस्वरूपनियतत्वरूपा त्यागोपादानशून्यत्वशक्तिः।

जो कम-बढ़ नहीं होता - ऐसे स्वरूप में नियतत्वरूप (निश्चिततया यथावत् रहनेरूप) त्यागोपादानशून्यत्वशक्ति।

जिस शक्ति के कारण वस्तु घटती-बढ़ती नहीं - ऐसे स्वरूप में नियतरूप अर्थात् स्वरूप में ही रहनेरूप त्यागोपादानशून्यत्व शक्ति है। यह सोलहवीं शक्ति है। भगवान आत्मा सोलह कलाओं से युक्त चन्द्रमा के समान परिपूर्ण है - इस शक्ति में यही बताया गया है कि भगवान आत्मा में हानि-वृद्धि नहीं होती, वह तो भरितावस्थ है, परिपूर्ण अवस्थित है; उसमें अशुद्धता का तो नामो-निशान भी नहीं है।

जो शक्ति त्रिकाल शुद्ध है, वह द्रव्य व गुण में तो अनादि से व्यापक है तथा शक्तिवान द्रव्य की अन्तर्मुख प्रतीति होने पर शक्ति जब पर्याय में भी व्यापक हो जाती है, तब पर्याय में शक्ति का निर्मल कार्य प्रगट हो जाता है। त्रिकाली गुण-द्रव्य तो परद्रव्य और विकार के ग्रहण-त्याग से रहित त्यागोपादानशून्य हैं, उनमें कोई घट-बढ़ नहीं है। पर्याय अपूर्ण शुद्ध हो या पूर्ण शुद्ध हो, '**जिसप्रकार द्रव्य में कोई घट-बढ़ नहीं होती; उसीप्रकार पर्याय में भी परद्रव्य का अथवा विकार का ग्रहण-त्याग नहीं होने से घट-बढ़ नहीं होती**' - ऐसी सूक्ष्म बात है भाई!

यह त्यागोपादानशून्यत्व शक्ति घट-बढ़ रहित नियतत्वरूप है। इसका पर्याय में परिणमन होता है; जिससे पर्याय में शक्ति व्यापक होने पर उसमें भी घट-बढ़ नहीं होती। भले पर्याय में अल्प अर्थात् अपूर्ण शुद्धता हो; परन्तु वह त्रिकाली द्रव्य को प्रसिद्ध करती है, विकार को अथवा पर्याय को प्रसिद्ध नहीं करती। परद्रव्य की अथवा विकार की उसमें घुसपैठ ही नहीं है। भाई! यदि एक भी पर्याय में कमी-बेशी होना मानें तो त्रिकाली द्रव्य की सिद्धि नहीं हो अर्थात् मिथ्यात्वरूप अशुद्धता बनी रहे; परन्तु यहाँ अशुद्धता की बात ही नहीं है। इसप्रकार द्रव्य की क्रमवर्ती निर्मल-निर्मल पर्यायों में इस त्यागोपादानशून्यत्व शक्ति का भी एक साथ परिणमन होता है।

जो वस्तु है, वह तो त्रिकाल त्यागोपादान रहित है। परद्रव्य अथवा विकार का ग्रहण तथा उसका त्याग तो जीव के स्वरूप में नहीं है अर्थात् राग का त्याग करना और निर्मल पर्याय को उत्पन्न करना जीव के स्वरूप में नहीं है। यह पर्याय तो सहज उत्पन्न होती है। जो निर्मल पर्याय प्रगट होती है, वह घट-बढ़ रहित है अर्थात् उसमें विकार का ग्रहण-त्याग नहीं है। भाई! यह बात तो सर्वज्ञदेव के सिवाय अन्य कहीं नहीं है।

भाई! तू देख तो सही अन्दर पूर्ण शुद्ध तेरी चीज कैसी है? तुझे पूर्ण शुद्धता प्रगट हो तो क्या अन्दर कोई कमी आ जाती है? और कभी अपूर्ण शुद्धता रहे तो क्या अन्दर की वस्तु में विशेष शुद्धता रहती है। नहीं, ऐसा है ही नहीं। त्रिकाली शुद्ध द्रव्य एक ज्ञायक भावमय द्रव्य है वह तो जैसा है वैसा ही है, उसमें कभी कोई कमी-वृद्धि होती ही नहीं है; क्योंकि उसमें परद्रव्य-परभाव का ग्रहण-त्याग नहीं होता। यहाँ तो विशेष पर्याय की बात सिद्ध करते हैं। **'जो शक्ति है, वह द्रव्य में त्रिकाल व्यापक है और दृष्टिवंत को वह पर्याय में व्यापक होती है'**। जो शक्तिवान द्रव्य है, उसकी अन्तरदृष्टि और अन्तररमणता होने पर उत्पन्न होनेवाले निर्मल रत्नत्रय में घट-बढ़ नहीं होती है; क्योंकि उसमें भी परद्रव्य तथा परभाव का ग्रहण-त्याग नहीं होता।

अरे! परमात्मा का विरह हो गया; तथापि भरतक्षेत्र में परमात्मा की वाणी इस समयसार में रह गई है। यह हमारा सद्भाग्य है कि यह हमें प्राप्त हुई है। यह वाणी साक्षात् शब्दब्रह्म है, जिनवचन है।

भाई! तू राग से लाभ होना मानता है; परन्तु यह तो मिथ्या मान्यता है; क्योंकि राग तेरे स्वरूप में ही नहीं है तो तुझे कैसे लाभदायक हो सकता है? वास्तव में तो पर्याय को ग्रहण करना, छोड़ना भी द्रव्य में नहीं है। तब अपने को पर का और राग का ग्रहण-त्याग करनेवाला मानना तो स्पष्ट मिथ्यात्व है; क्योंकि पर का ग्रहण-त्याग आत्मा में है ही नहीं। विचार तो कर! क्या जीव रजकणों को ग्रहण करता है अथवा छोड़ता है? क्या स्त्री, कुटुम्ब-परिवार, महल-मकान, अटारी और धनादि सामग्री इत्यादि को जीव ग्रहण करता है अथवा छोड़ता है? ऐसा बिल्कुल नहीं है।

प्रश्न – दीक्षा के समय मुनिराज घर-बार इत्यादि छोड़ते तो हैं न?

उत्तर – छोड़ते कहाँ हैं? घर-बार इत्यादि तो जहाँ हैं, वहाँ ही हैं। पहले इन पदार्थों में आसक्ति थी; परन्तु विशेष वैराग्य होने पर स्वरूप में प्रगाढ़ लीनता होने से ये बाह्य पदार्थ सहज ही छूट जाते हैं, तब मुनिराज ने इन सभी को छोड़ा – ऐसा व्यवहार से कहा जाता है। वस्तुत: परद्रव्य का ग्रहण-त्याग आत्मा में है ही नहीं।

दीक्षाकाल में मुनिराज के आत्मा में कोई घट-बढ़ होती हो – ऐसा नहीं है। **वस्त्रादि को छोड़ना आहारादि को ग्रहण करना** – ऐसा चारित्रगुण की पर्याय का स्वभाव नहीं है। मुनिराज के चारित्रगुण की पर्याय तो आत्मलीनतारूप है, उसमें पर का ग्रहण-त्याग है ही नहीं। भगवान आत्मा चिदानन्द प्रभु पूर्णानन्द का नाथ है, उसमें कभी घट-बढ़ नहीं होती – ऐसा उसका त्यागोपादानशून्यत्व स्वभाव है।

यह त्यागोपादानशून्यत्व शक्ति द्रव्य-गुण-पर्याय तीनों में व्यापती है। यह शक्ति द्रव्य की दूसरी अनन्त शक्तियों में व्यापती है और अनन्त गुणों की

अनन्त पर्यायों में भी इस शक्ति का रूप है, जिससे द्रव्य-पर्याय में घट-बढ़ नहीं होती अर्थात् द्रव्य-पर्याय में परद्रव्य में घुसपैठ नहीं होती।

भाई! अपूर्ण शुद्ध और पूर्ण शुद्ध - ऐसा भेद पर्याय में भले हो; परन्तु जो अपूर्ण शुद्ध पर्याय है, वह भी घट-बढ़ रहित सम्पूर्ण द्रव्य को सिद्ध करती है। यदि एक पर्याय को भी न मानें तो सम्पूर्ण द्रव्य सिद्ध नहीं हो; क्योंकि सभी अनन्त पर्यायों का पिण्ड द्रव्य है, यह तो ख्याल में आने जैसी बात है।

बंध अधिकार में जयसेनाचार्य की टीका में आता है कि बंध का नाश करने के लिए यह भावना करना चाहिए कि 'मैं निर्विकल्प हूँ, मैं भरितावस्थ हूँ।' भरितावस्थ का अर्थ पर्याय नहीं; बल्कि भरितावस्थ का अर्थ है कि मैं निश्चय से शक्ति से परिपूर्ण भरा हूँ। **आहाहा...! मैं घट-बढ़ रहित अनन्त शक्ति से पूर्ण सहज शुद्ध ज्ञानानन्दस्वभावी प्रभु हूँ।** **(क्रमशः)**

हमारे ये तीर्थस्थान वीतरागियों के स्थान हैं, वैरागियों के स्थान हैं योगियों के स्थान हैं; उन्हें भोगियों के स्थान बनाना उचित नहीं है, उन्हें भोगियों के स्थानों के समान सजाना भी उचित नहीं है। उन्हें साफ-सुथरा रखना और जीवनोपयोगी आवश्यकताओं से सम्पन्न करना अलग बात है; पर वहाँ मनोरंजन के भी साधन जुटाना, आमोद-प्रमोद के साधन जुटाना, बाग-बगीचा लगाना, अभक्ष्य भक्षण के साधन जुटाना तथा टी.वी. और वी.सी.आर. का प्रवेश कदापि ठीक नहीं है।

ये तो संयम से रहने के स्थान हैं, सादा जीवन जीने के स्थान हैं; यहाँ साज-श्रृंगार करके जाना, असंयमित जीवन जीना - इनकी महिमा, इनका गौरव कम करनेवाला है।

इन्हें तो ध्यान और अध्ययन के केन्द्र बनाना चाहिए। यहाँ तो जैनदर्शन के गहन अध्ययन की व्यवस्था होनी चाहिए। यहाँ तो आध्यात्मिक वातावरण रहना चाहिए, आध्यात्मिक चर्चा-वार्ता होना चाहिए।

- डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल - शा.तीर्थ. सम्मेदशिखर **(पृष्ठ क्र. 26)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

(गतांक से आगे....)

प्रश्न : जिनवर कथित व्यवहारचारित्र का सावधानी पूर्वक पालन सम्यग्दर्शन होने का कारण होता है या नहीं ?

उत्तर : रंचमात्र भी कारण नहीं होता। सम्यग्दर्शन होने का कारण तो अपना त्रिकाली आत्मा ही है। जिनेन्द्र कथित व्यवहारचारित्र को सावधानी पूर्वक और परिपूर्ण पाले; तथापि उससे सम्यग्दर्शन नहीं होता।

प्रश्न : दोनों अपेक्षाओं का प्रमाणज्ञान करें, फिर पर्यायदृष्टि गौण करें और निश्चयदृष्टि मुख्य करें – इतनी मेहनत करने के बदले '**आत्मा चैतन्य है**'– मात्र इतना ही अनुभव में आए तो इतनी श्रद्धा सम्यग्दर्शन है या नहीं ?

उत्तर : नहीं; नास्तिक मत के सिवाय सभी मतवाले आत्मा को चैतन्यमात्र मानते हैं। यदि इतनी ही श्रद्धा को सम्यग्दर्शन कहा जाय तो सबको सम्यक्त्व सिद्ध हो जायेगा। सर्वज्ञ वीतराग ने आत्मा का जैसा स्वतंत्र और पूर्ण स्वरूप कहा है – वैसा सत्समागम से जानकर, स्वभाव से निर्णय करके, उसका ही श्रद्धान करने से निश्चय सम्यक्त्व होता है। सर्वज्ञ को स्वीकार करने वाले जीव ने यह निर्णय किया है कि अल्पज्ञ जीव अधूरी अवस्था के काल में भी सर्वज्ञ परमात्मा जैसा पूर्ण सामर्थ्यवान है। पूर्ण को स्वीकार करने वाला प्रतिसमय पूर्ण होने की ताकत रखता है। परोक्षज्ञान में वस्तु के वर्तमान स्वतंत्र त्रिकाली अखण्ड परिपूर्ण स्वरूप का निर्णय पूर्णता के लक्ष्य से ही होता है – शुद्धनय से ऐसा जानना निश्चय सम्यक्त्व है।

प्रश्न : जिसप्रकार क्रियानय से साध्य सिद्धि है – ऐसा एक धर्म है और ज्ञाननय से साध्य सिद्धि है – ऐसा भी एक धर्म है; उसीप्रकार त्रिकाली द्रव्य

आश्रय से भी सम्यग्दर्शन हो और निर्मल पर्याय सहित द्रव्य के आश्रय से भी सम्यग्दर्शन हो – ऐसा है क्या ?

उत्तर : नहीं, एक ही समय में जानने योग्य क्रियानय तथा ज्ञाननय इत्यादि अनन्तधर्म हैं ; परन्तु सम्यग्दर्शन का विषय एक नय से त्रिकालीद्रव्य भी है और दूसरे नय से पर्याययुक्त द्रव्य भी सम्यग्दर्शन का विषय बने ऐसा कोई धर्म ही नहीं है। सम्यग्दर्शन का विषय तो मात्र त्रिकाली ध्रुव द्रव्य (पर्यायरहित) ही है, उसी के आश्रय से सम्यग्दर्शन होता है; अन्यथा सम्यग्दर्शन नहीं होता।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन तो राग छोड़ने पर होता है न ?

उत्तर : राग की रुचि छोड़कर स्वभाव की रुचि करने से सम्यग्दर्शन होता है। सम्यग्दर्शन होने पर राग से भिन्नता भासित होती है, राग सर्वथा नहीं छूटता ; पर राग को दु:खरूप जानकर उसकी रुचि छूटती है।

प्रश्न : गुण-भेद के विचार से भी मिथ्यात्व न टले तो कैसे टलेगा ?

उत्तर : जिसमें राग और मिथ्यात्व है ही नहीं – उस शुद्धवस्तु में परिणाम तन्मय होने पर मिथ्यात्व टल जाता है। दूसरा कोई उपाय मिथ्यात्व के दूर करने का नहीं है। भाई ! गुण-भेद का विकल्प भी शुद्धवस्तु में नहीं है ; शुद्धवस्तु की प्रतीति गुण-भेद के विकल्प की अपेक्षा भी नहीं रखती। **वस्तु में विकल्प नहीं और विकल्प में वस्तु नहीं** – इसप्रकार दोनों की भिन्नता जानकर परिणति विकल्प में से हटकर स्वभाव में आवे तब मिथ्यात्व का अभाव हो जाता है। यही मिथ्यात्व टालने की रीति है अर्थात् उपयोग और रागादिक का भेदज्ञान होना ही सम्यक्त्व का मार्ग है ; इसलिए विकल्प की अपेक्षा चिदानन्द स्वभाव की अनन्त महिमा भासित होने पर उसका अनन्त गुणा रस आना चाहिए।

प्रश्न : जिसको सम्यग्दर्शन होना ही है, उनकी पूर्व भूमिका कैसी होगी ?

उत्तर : इस जीव को जैसा वस्तु का स्वरूप है, वैसा सविकल्प निर्णय होता है ; लेकिन सविकल्प से निर्विकल्पता होती ही है – ऐसा नहीं है। **(क्रमश:)**

प्रक्षाल पाठ

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(दोहा)

भक्तिभाव से हम करें, जिन प्रतिमा प्रक्षाल।
अरे विकारी भाव का, हो जावे प्रक्षाल।।1।।

दिन का शुभ आरंभ हो, चित्त रहे निर्भ्रान्त।
प्रतिमा के प्रक्षाल से, मन हो जावे शान्त।।2।।

(हरिगीतिका)

यद्यपि इस काल में अरहंत जिन उपलब्ध ना।
किन्तु हमारे भाग्य से जिनबिंब तो उपलब्ध हैं।।
जिनबिंब का प्रक्षाल पूजन और दर्शन भाव से।
जो भाग्यशाली करें प्रतिदिन भाव से अति चाव से।।3।।

वे भाग्यशाली भव्य निज हित कार्य में नित रत रहें।
आपके गुणगान वे नित निरन्तर करते रहें।।
निज आतमा को जानकर वे शीघ्र ही भव पार हों।
निज आतमा का ध्यान धर वे भवजलधि से पार हों।।4।।

जिसतरह समव-शरण में अरहंत जिन विद्यमान हैं।
और उनका इस जगत में उच्चतम स्थान है।।
व्यवहार होता जिसतरह का अरे उनके सामने।
बस उसतरह की विनय हो जिनमूर्तियों के सामने।।5।।

यदि मूर्तियाँ हों प्रतिष्ठित स्थापना निक्षेप से।
अरहंत सम ही पूज्य हैं जिनमार्ग में व्यवहार से।।

अरे कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिंब जितने लोक में।
वे पूज्य हैं शत इन्द्र कर जिनशास्त्र के आलोक में।।06।।

अति विनयपूर्वक बिंब का प्रक्षाल होना चाहिये।
अर दिवस में प्रत्येक दिन इकबार होना चाहिये।।
स्वस्थ तन-मन स्वच्छ पट अर सावधानी पूर्वक।
सद्भाव से ही पुरुष को प्रक्षाल करना चाहिये।।07।।

प्रत्येक नर-नारी अरे पूजन करे प्रत्येक दिन।
प्रक्षाल तो बस एक जन इकबार ही दिन में करे।।
प्रक्षाल पूजन अंग ना प्रत्येक को अनिवार्य ना।
प्रक्षाल तो इक बिंब का इक बार होना चाहिये।।08।।

छवि वीतरागी शान्त मुद्रा कही है जिनदेव की।
जिनमूर्ति की भी शान्त मुद्रा वीतरागी छवि कही।।
'जिनमूर्तियाँ हों मुस्कुराती' - कभी हो सकता नहीं।
और हंसना वीतरागी भाव हो सकता नहीं।।09।।

जब वीतरागी जिनवरों का न्हवन हो सकता नहीं।
एवं दिगम्बर मुनिवरों का न्हवन हो सकता नहीं।।
जब मुनिवरों के मूलगुण में एक गुण अस्नान है।
तब प्रतिष्ठित मूर्तियों का न्हवन होवे किस तरह?।।10।।

बस इसलिये जिनमूर्तियों को स्वच्छ रखने के लिये।
और अपनी भावना को व्यक्त करने के लिये।।
अरे प्रासुक नीर से प्रक्षाल करना चाहिये।
न्हवन ना अभिषेक ना प्रक्षाल होना चाहिये।।11।।

जिनबिंब का स्पर्श महिला वर्ग कर सकता नहीं।
जिनबिंब का प्रक्षाल महिला वर्ग कर सकता नहीं।।
दिगम्बर जिनबिंब से सम्पूर्ण महिला वर्ग को।
एक सीमा तक सुनिश्चित दूर रहना चाहिये।।12।।

क्योंकि ये जिनबिंब जिनवरदेव के प्रतिबिंब हैं।
वीतरागी सर्वज्ञानी देव के ही बिंब हैं।।
उन बिंब का जिनबिंब का अति हर्ष से उल्लास से।
प्रक्षाल सब जन कर रहे अत्यन्त निर्मल भाव से।।13।।

जिनबिंब का प्रक्षाल जो जन करें निर्मलभाव से।
और पूजन करें प्रतिदिन भाव से अति चाव से।।
जिन शास्त्र का स्वाध्याय एवं रहें संयमभाव से।
वे भव्यजन भवपार होंगे स्वयं के आधार से।।14।।

(दोहा)

महाभाग्य हमने किया, जिन प्रतिमा प्रक्षाल।
चरणों में जिनबिंब के, सदा नवावें भाल।।15।।

भक्तिभाव से जो करें, जिन प्रतिमा प्रक्षाल।
निज आतम का ध्यान धर, वे होवें भव पार।।16।।

-●-

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन तथा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app आज ही Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- FB-/vitragvani YT-c/ vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

समाचार दर्शन –

ज्ञानतीर्थ टोडरमल स्मारक की वसुंधरा पर ढाईद्वीप रथ

जयपुर : यहाँ 20 दिसम्बर 2022 को रात्रि में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन की वसुंधरा पर ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आमंत्रण देने हेतु ढाईद्वीप रथ का आगमन हुआ।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री हीराचंदजी वैद आदि अनेक विद्वानों एवं समाज के प्रतिष्ठित महानुभवों ने रथ का स्वागत किया। समारोह में अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का विशेष उद्बोधन प्राप्त हुआ तथा डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने उपस्थित जनसमुदाय को पंचकल्याणक में आमन्त्रित किया व पण्डित सुमितजी शास्त्री ने ढाईद्वीप जिनायतन का परिचय प्रदान किया। समारोह के अंत में उत्साह पूर्वक भक्ति-भाव से रथ में शास्त्र विराजमान किए गए।

ज्ञातव्य है कि 20 दिसम्बर 2022 को प्रात: जयपुर में ही स्थित पण्डित टोडरमलजी की साधना-स्थली श्री दिगम्बर जैन तेरहापथ पंचायती बड़ा मन्दिर में भी रथ का स्वागत किया गया। साथ ही ढाईद्वीप विधान भी सम्पन्न हुआ।

द्वि-दिवसीय विशेष सेमिनार सम्पन्न

जयपुर : यहाँ 17 व 18 दिसम्बर 2022 को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के तत्त्वावधान में द्वि-दिवसीय विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसका संयोजन अर्हत्-वार्ता ने एवं निर्देशन डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

इस सेमिनार में विदुषी प्रज्ञाजी देवलाली एवं पण्डित जिनेशजी शास्त्री मुंबई ने 8 सत्रों में शोध की भूमिका व इतिहास, शोधक विद्वानों का परिचय, शोध में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग और वर्तमान में शोध की आवश्यकता आदि अनेक विषयों विभिन्न विषयों का परिज्ञान कराया गया।

19 दिसम्बर को सेमिनार का समापन समारोह तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सभा का संचालन पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर ने किया। आभार-प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

दुबई में अभूतपूर्व धर्म प्रभावना

दुबई : यहाँ दिनांक 27 नवम्बर से 05 दिसम्बर 2022 तक DSO स्थित आदिनाथ दिगम्बर जिन चैत्यालय में प्रतिदिन प्रात: समयसार के आधार से एवं रात्रि में विविध स्थानों पर रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार से डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के विशेष प्रवचनों का लाभ मिला। एक दिन अजमान स्थित दिगम्बर जिन चैत्यालय एवं एक दिन आबूधाबी में डॉ. गोधा के व्याख्यानों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि इस अवसर पर सत्पथ फॉउण्डेशन के तत्त्वावधान में 2 से 4 दिसम्बर 2022 तक विशेषरूप से शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर प्रत्येक दिन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के दो-दो प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित नितेशजी शास्त्री दुबई के एक प्रवचन का लाभ मिला। साथ ही बालकक्षाओं एवं ध्यान के विशेष सेमिनारों का आयोजन भी किया गया।

समस्त कार्यक्रम श्री पद्मकुमारजी पाटनी व श्री आलोकजी जैन अजमान के निर्देशन में श्री अभिषेकजी टक्कामोरे, श्री पुनीतजी वैद, श्री शुद्धात्मजी भण्डारी, श्री अमितजी पाटनी, श्री अमितजी जैन, श्री अंकितजी समैया, श्री आतिशजी ठोलिया, श्री स्वीटूजी शाह, श्री विरलजी शाह, श्री नमनजी सरैया, श्रीमती स्मिताजी महेता के सहयोग से सम्पन्न हुए। आवास की व्यवस्था श्री दिनकरभाई जैन के सहयोग से हुई।

प्रथम वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

आरोन-गुना : यहाँ दिनांक 20 दिसम्बर से 24 दिसम्बर 2022 तक श्री पंचबालयति दिगम्बर जैन मन्दिर में 2021 में सम्पन्न पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रथम पंच-दिवसीय वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: विविध विधानों में प्रवचनसार, समयसार, नियमसार एवं नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। साथ ही पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर के प्रात: समयसार, दोपहर में द्रव्यदृष्टि-प्रकाश एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ के आधार से प्रवचनों का लाभ मिला। विधान में पण्डित अशोकजी शास्त्री मांगुलकर का विशेष सहयोग रहा। रात्रि में इन्द्रसभा, राजसभा के माध्यम से तत्त्वचर्चायें की गईं। एक दिन पंचकल्याणक का स्मरण कराने वाली झलकियाँ दिखाई गईं।

– अमन शास्त्री आरोन

सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी का सम्मान समारोह

इन्दौर : यहाँ सदी के ऐतिहासिक ढाईद्वीप जिनायतन के पंचकल्याणक में सौधर्म इन्द्र व शची इन्द्राणी बनने वाले सौभाग्यशाली पात्र श्री कमलजी-उषाजी पाड़लिया के सम्मान हेतु 11 दिसम्बर 2022 को एक विशिष्ट समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्री ढाईद्वीप मण्डल विधान सम्पन्न हुआ। विधान बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री के निर्देशन एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के समागम में पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने कराया।

इस समारोह में श्री राजकुमारजी पाटोदी, श्री सुदर्शनजी गुप्ता, श्री हंसमुखजी गांधी, श्री अशोकजी बड़जात्या, श्री पदमकुमारजी पहाड़िया, श्री प्रदीपजी बड़जात्या, श्री इन्द्रकुमारजी सेठी, श्री मनमोहनजी झांझरी, श्रीमती पुष्पाजी कासलीवाल, श्रीमती निर्मलाजी जैन, श्रीमती सरलाजी सामरिया आदि मौजूद थे।

यह समारोह इंदौर की प्रमुख संस्थाओं द्वारा किया गया, जिसमें दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, दिगम्बर जैन समाज सामाजिक संसद कीर्तिस्तम्भ, दिगम्बर जैन आम समाज संगठन, अध्यात्म संजीवनी ग्रुप, दिगम्बर जैन समाज साधनानगर, आयुष निर्माता संघ, मोदीजी की नसिया, स्वस्तिधाम जहाजपुर निर्माण ट्रस्ट, दिगम्बर जैन महासमिति, श्वेताम्बर फेडरेशन ग्रुप्स ट्रस्ट, दिगम्बर जैन समाज नेमिनगर, रामचन्द्र नगर, रामाशाह, बघेरवातागंज आदि सम्मिलित थे।

'कोरोना युद्धा सम्मान' से सम्मानित डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री

उदयपुर : यहाँ 15 दिसम्बर को पारस हॉस्पिटल की तीसरी वर्षगांठ पर दैनिक भास्कर समूह के रेडियो पार्टनर 94.3 My FM² की ओर से सलाम 3 सम्मान कार्यक्रम के तहत अ. भा. जैन युवा फैडरेशन राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष एवं भाजपा आपदा राहत एवं सहयोग विभाग राजस्थान के प्रदेश संयोजक डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री को कोरोना की प्रथम व द्वितीय लहर में जन सेवा हेतु **कोरोना योद्धा सम्मान** से सम्मानित किया गया। यह सम्मान श्री ताराचन्दजी मीणा, श्री आनन्दजी शर्मा, श्रीमती नन्दिताजी भट्ट, श्री आर.एल. सुमन एवं श्री शंकरजी खराडी के हस्ते प्रदान किया गया।

ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक विद्वान हैं। जो सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

साप्ताहिक विचार गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों के अन्तर्गत तात्त्विक विचार गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 26 नवम्बर 2022 को **जिनधर्म की नींव पाठमालायें** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सम्यक जैन दिल्ली व मोक्ष जैन पिड़ावा रहे। सत्र का संचालन सुबलश्री समाज शेडवाल व दिव्यांश जैन सागर ने एवं मंगलाचरण आदि जैन खनियांधाना ने किया।

इसी शृंखला में दिनांक 27 नवम्बर 2022 को **सप्त तत्त्व : एक अनुशीलन** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित भागचन्दजी शास्त्री जयपुर ने की। कुशाग्र जैन सागवाड़ा और जिनय जैन इन्दौर श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में चुने गए। सत्र का संचालन सिद्धान्त उपाध्ये चैन्नई व दर्शन पाटील नान्दनी ने एवं मंगलाचरण अनमोल जैन राघौगढ़ ने किया।

इसी क्रम में दिनांक 04 दिसम्बर 2022 को **जैन दर्शन में कर्म व्यवस्था** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता विदुषी प्रतीतिजी शास्त्री नागपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में असान जैन खनियांधाना एवं राहुल जैन अमायन चुने गए। सत्र का संचालन अमन जैन दमोह व आदित्य जैन फुटेरा एवं मंगलाचरण वंशित जैन कोटा ने किया।

इसी कड़ी में दिनांक 10 दिसम्बर 2022 को **जिनागम में ध्यान का स्वरूप** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर ने की। गोष्ठी में प्रथम स्थान सहज जैन छिन्दवाड़ा एवं द्वितीय स्थान अमन जैन खनियांधाना ने प्राप्त किया। सत्र का संचालन वैभव जैन सागर तथा विराग बैलोकर डासाला व मंगलाचरण कुशाग्र जैन ने किया।

11 दिसम्बर 2022 को आयोजित गोष्ठी **मोक्षमार्ग प्रकाशक : एक परिशीलन** विषय पर आधारित थी। जिसकी अध्यक्षता श्रीमती श्रुतिजी शास्त्री ने की एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमती संगीताजी जैन रहीं। इस गोष्ठी के श्रेष्ठ वक्ता शास्त्री तृतीय वर्ष से अविरल जैन खनियांधाना व शास्त्री प्रथम वर्ष से संयम जैन खैरागढ़ रहे। सत्र का संचालन चेतन जैन गुढ़ाचन्द्रजी एवं मंगलाचरण जिनय जैन इन्दौर ने किया।

देशभर में ढाईद्वीप रथ का प्रवर्तन

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रचार हेतु भारतवर्ष में अलौकिक सौंदर्य युक्त ढाईद्वीप जिनायतन की रचना सदृश ढाईद्वीप रथ का प्रवर्तन किया जा रहा है।

ढाईद्वीप रथ ने **गुजरात** के अन्तर्गत तलोद, चैतन्यधाम, नवरंगपुरा, मेघानी नगर, वस्त्रापुर, ओढ़व, मणिनगर, बोटाद, सुरेन्द्रनगर, लिमडी, सोनगढ़, भावनगर, गिरनार, राजकोट, जामनगर, मोरबी, बाकानेर, सूरत एवं **मध्यप्रदेश** के अन्तर्गत शुजालपुर, भोपाल, विदिशा, बीना, बण्डा, दलपतपुर, नैनागिर, बक्सवाहा, दमोह, खड़ैरी, फुटेरा, शाहगढ़, घुवारा, द्रोणगिरि, टीकमगढ़, ललितपुर, आरोन, गुना, बदरवास, शिवपुरी, कोलारस, लुकवासा, खनियांधाना, सोनागिर, ग्वालियर, गोरमी, मौ, अमायन, भिण्ड, आगरा, मेरठ, जयपुर आदि नगरों में भ्रमण कर साधर्मियों को सदी के ऐतिहासिक पंचकल्याणक के साक्षी बनने के लिए आमंत्रित किया।

उक्त सभी स्थानों पर रथ का स्वागत किया गया। पूजन, प्रवचन एवं रथ में शास्त्र विराजमान कर नगर में रथ यात्रा निकाली गई।

वैराग्य समाचार

1) चन्देरी निवासी **श्रीमती कमलादेवी बंसल** का 05 दिसम्बर 2022 को पंचपरमेष्ठी के स्मरण पूर्वक देह-वियोग हो गया। ज्ञातव्य है कि आप डॉ. अखिलजी बंसल की माताश्री एवं श्रीमती गुणमालाजी धर्मपत्नी डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की भाभी थीं।

2) बोरीवली-मुम्बई निवासी **श्रीमती पुष्पाबेन धीरजलाल शेठ** का 06 दिसम्बर 2022 को शान्त परिणाम पूर्वक देह-परिवर्तन हुआ। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित राजेशजी शेठ की माताश्री एवं स्नातक पण्डित जिनेशजी शास्त्री की दादीश्री थीं। आपकी स्मृति में आपके परिवार की ओर से 11,000/- रुपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

सदी के ऐतिहासिक पंचकल्याणक का ...

ढाईद्वीप रथ देशभर में आमंत्रण देते हुए

सूरत

लिमड़ी

मंगलायतन

दलपतपुर

अमायन

मणिनगर

सोनगढ़

मेरठ

बोटाद

सुरेन्द्रनगर

ओढव

R.N.I. No. 38278/83 Postal Regd. No. JaipurCity/421/2021-23

टोडरमल स्मारक में ढाईद्वीप रथ का स्वागत

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 21 दिसम्बर 2022

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**